# राजस्थान में महिला रोजगार

**सुदीप कुमावत**

कृषि व कृषि से सम्बन्धित कार्यों में महिलाओं की भागीदारी 83 प्रतिशत है। कृषि उत्पादन में महिलाओं की वास्तविक भूमिका होते हुए भी महिलाओं के कार्यों को उपेक्षित कर दिया जाता है। उनके द्वारा किए गए कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता है जिससे महिलाओं की राष्ट्रीय आय में भूमिका नगण्य होती है। लेकिन संख्यात्मक गणना के आधार पर यह विश्व के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में 20–30 प्रतिशत की वृद्धि करती है।

महिलाएँ समाज के विकास की दिशा एवं दशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। महिला परिवार का आधार स्तंभ है। महिलाओं की स्थिति से परिवार, समाज एवं राष्ट्र की सामाजिक व आर्थिक स्थिति प्रभावित होती है। इसलिए किसी भी देश की वास्तविक प्रगति को जानने के लिए वहाँ की महिलाओं की स्थिति एवं स्तर का आंकलन करना अति आवश्यक है। राष्ट्र के विकास में गति लाने के लिए महिलाओं पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएँ देश की जनसंख्या का लगभग आधा भाग है। अतः महिलाओं का विकास अत्यन्त आवश्यक है।

देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात आर्थिक एवं सामाजिक वातावरण में महत्वपूर्ण परिवर्तन होने के कारण महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थिति में अत्यधिक परिवर्तन आया है। भारत में सन् 1970 के बाद महिला रोजगार पर विशेष ध्यान दिया गया है जिससे महिलाओं की कार्य सहभागिता का प्रतिशत निरन्तर बढ़ रहा है। जैसा कि सन 1995 में मानव विकास रिपोर्ट में बताया गया है, कि ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं की कार्य सहभागिता दर अधिक है भारतीय श्रम में महिलाओं का योगदान एक–तिहाई है जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 90 प्रतिशत एवं शहरी क्षेत्र में 10 प्रतिशत महिलाएँ असंगठित क्षेत्रों में कार्यरत है। वर्तमान में महिलाओं की जीवन के हर क्षेत्र में सहभागिता बढ़ी है जिससे समाज में महिलाओं की स्थिति सुदृढ़ हुई है।

राजस्थान सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से एक पिछड़ा हुआ राज्य है। राजस्थान में महिला रोजगार की स्थिति पुरूषों की तुलना में दयनीय है तथा ग्रामीण महिलाओं की स्थिति शहरी महिलाओं की तुलना में पिछड़ी हुई है। जिसका मुख्य कारण राजस्थान की सामाजिक परम्पराएं एवं रीति–रिवाज है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राजस्थान सरकार द्वारा महिला रोजगार को बढ़ाने हेतु कई प्रकार के प्रयास किए गए है जिनसे महिला रोजगार की स्थिति में सुधार हुआ है।

राजस्थान में महिला श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले कार्य निम्न प्रकार है :

**घरेलू कार्य :**

खाना बनाना, कपड़े धोना, घर की सफाई करना, बच्चों की देखभाल करना, पीने का पानी लेकर आना, लकड़ी एकत्रित करना, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, मुर्गीपालन आदि।

**कृषि कार्य या काश्तकार :**

राजस्थान की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान है। कृषि कार्य ग्रामीण जनसंख्या का मुख्य व्यवसाय है। कृषि क्षेत्र में ज्यादातर कार्य महिलाओं द्वारा किए जाते हैं। राजस्थान में महिलाओं की कृषि कार्य में भागीदारी दो–तिहाई है। जिससे यह पता लगता है कि कृषि उत्पादन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान है।

**कृषि श्रमिक या खेतीहर मजदूर :**

कृषि श्रमिक वह है जो दूसरे के खेत में मजदूरी पर कार्य करता है। खेतीहर मजदूरी में महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में ज्यादा पाई जाती है। राजस्थान में कृषि श्रमिकों में महिलाओं की संख्या 16.2 प्रतिशत है। महिलाएँ घरेलू कार्य के साथ–साथ दूसरे व्यक्तियों के खेत में काम करके अपने परिवार की आजीविका बढ़ाती है।

**पारिवारिक उद्योग कर्मी :**

पारिवारिक उद्योग वह है जो परिवार के एक या अधिक सदस्यों द्वारा चलाया जाता है। राजस्थान में पारिवारिक उद्योग निम्न प्रकार है :– पापड़ बनाना, बीड़ी बनाना, मिट्टी के बर्तन बनाना व बेचना, हाथ से बने खिलौने, चमड़ा व चमड़े से निर्मित वस्तुएँ, खाद्य पदार्थ, पेय पदार्थ, सूती वस्त्र उद्योग, जूट, ऊनी या रेशमी वस्त्र उद्योग, लकड़ी एवं लकड़ी से निर्मित वस्तुएँ, कागज और कागज से निर्मित वस्तुएँ, छपाई एवं प्रकाशन, कढ़ाई–बुनाई आदि। पारिवारिक उद्योगों में महिलाओं की भागीदारी 2.8 प्रतिशत है जो लगभग पुरूषों के बराबर है।

**अन्य कर्मीः–**इसके अन्तर्गत सभी सरकारी कर्मचारी, नगरपालिका के कर्मचारी, अध्यापक, कारखाने में काम करने वाले, बागान कर्मचारी, व्यापार, वाणिज्य, व्यवसाय, परिवहन, बैंकिंग, खनन, निर्माण, राजनैतिक या सामाजिक कार्यों में कार्यरत व्यक्ति, मनोरंजन कराने वाले आदि। इन सभी कार्यों में महिलाओं का योगदान 14 प्रतिशत है जो पुरूषों की तुलना में काफी कम है।

---

**शोधछात्र अर्थशास्त्र विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर**

राजस्थान में महिला श्रमिकों की कार्य सहभागिता दर के आँकड़ो को निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है।

**तालिका–महिलाओं की कार्य सहभागिता दर**

| | | | | प्रतिशत | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| काश्तकार | खेतीहर | मजदूर | पारिवारिक | उद्योग कर्मी | अन्य कर्मी | कुल कर्मी |
| पुरूष | 48.1 | 7.2 | 2.9 | 41.9 | 50.0 | |
| स्त्री | 67.0 | 16.2 | 2.8 | 14.0 | 33.5 | |
| योग | 55.3 | 10.6 | 2.9 | 31.2 | 42.1 | |

(स्त्रोत : जनगणना प्रतिवेदन 2001 राजस्थान)

उपरोक्त तालिका से निम्न निष्कर्ष निकलते हैं :–

. कृषि कार्य में महिलाओं की भागीदारी पुरूषों की तुलना में अधिक है।

. कृषि व कृषि से सम्बन्धित कार्यों में 83 प्रतिशत महिलाएँ लगी हुई हैं।

. पारिवारिक उद्योगों में महिलाओं और पुरूषों का बराबर योगदान है।

अन्य कार्यों में महिलाओं का अंश पुरूषों की तुलना में काफी कम है। इसका मुख्य कारण अशिक्षा है जिसने महिलाओं द्वारा किये जाने वाले घरेलू कार्यों में एक प्राथमिक भागीदारी का काम किया है। इसलिए महिलाओं का कृषि कार्य में योगदान अधिक है व अन्य कार्यों में कम है।

महिला श्रमिकों द्वारा किए जाने वाले ज्यादातर कार्यों को असंगठित क्षेत्र में माना जाता है इसलिए उनका आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता है। अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार ग्रामीण क्षेत्रों में महिला श्रमिको द्वारा किए गए कार्यों का आंकलन नहीं किया जाता है। उनके द्वारा किए गए कार्यों को पारिवारिक श्रम मान जाता है। जिसका भुगतान नहीं किया जाता। लेकिन सांख्यात्मक गणना के आधार पर यह विश्व के सकल राष्ट्रीय उत्पाद में 20–30 प्रतिशत की वृद्धि करती है।

राजस्थान सरकार ने महिला रोजगार को प्रोत्साहन देने हेतु समय–समय पर नीतियों का निर्माण किया है। सरकार द्वारा महिला रोजगार को बढ़ाने हेतु निम्न कार्यक्रम संचालित किए जा रहे है : स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजना, राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारन्टी कार्यक्रम, महिला स्वयं सिद्ध योजना, जवाहर ग्राम समृद्धि योजना, सुनिश्चित रोजगार योजना, प्रधानमंत्री ग्रामोदय योजना, खादी एवं ग्रामोद्योग आयोग आदि। इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त महिलाओं में आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता के विकास की भावना जागृत करने हेतु निम्न कार्यक्रम संचालित किए गए है : महिला डेयरी परियोजना, स्वयं सहायता समूह आदि। इन कार्यक्रमों के संचालन से महिलाओं के जीवन को सामाजिक एवं आर्थिक दृष्टि से ऊँचा उठाने में मदद मिली है।

इस प्रकार महिला रोजगार में सुधार लाने हेतु कई कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। जिससे महिला रोजगार की स्थिति मजबूत होगी और महिलाओं की आर्थिक व सामाजिक विकास में भागीदारी बढ़ेगी।

राजस्थान में महिला रोजगार के अध्ययन के सारांश में यह पाया गया है कि राजस्थान में महिलाओं ने अपना घर का कार्य करते हुए, गैर कृषि कार्य करते हुए एवं इसके अतिरिक्त उन्होंने कृषि कार्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है कृषि उत्पादन के हर स्तर पर महिलाएँ शामिल है जैसे भूमि को तैयार करना, जोतना, फसल को तैयार करना, कटाई करना व बाजारों में बेचना आदि। कृषि उत्पादन में महिलाओं की वास्तविक भूमिका होते हुए भी महिलाओं के कार्यों को उपेक्षित कर दिया जाता है उनके द्वारा किए गए कार्यों का आर्थिक मूल्यांकन नहीं किया जाता है जिससे महिलाओं की राष्ट्रीय आय में भूमिका नगण्य है। राजस्थान सरकार द्वारा महिला रोजगार को प्रोत्साहन देने हेतु काफी कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में काफी हद तक महत्वपूर्ण सुधार हुए हैं।

अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि ग्रामीण महिलाओं की कार्य करने की क्षमता को और अधिक सशक्त किया जाए। जिससे ग्रामीण विकास में महिलाएँ अपनी भागीदारी पूरी जिम्मेदारी के साथ निभा सकें तथा उनके द्वारा किए गए कार्यों को मुद्रा में मापा जा सके।

REFERENCE

Agrawal, Sarita (1995), "Employment of Women in India" Journal of Indian School of Political Economy, Vol. 20, No. 2, Jan.-March, pp 83.

Choudhary, Sarmistha, (2004), "Invesible Activities of Rural Women,"
Kurukshetra, Vol. 52, No. 9, July, pp 30-36.

Jain D.K. and Meena, G.L., 2007, Women Dairy Federations,
Employment of Rural Women Kurukshetra, March pp, 35-77

Orhan, Ozcatalbs and Burhan, Ozkan 2003, the Role of Women in Agriculture and Rural Development in Turkey, AjWs, Vol.9, No.4, pp, 114-124.